



प्रेसाला नम्बर- 47

Masjiden Khushbudaar Rakhiye (Hindi)

मस्जिदें खुशबूदार रखिये



शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अज़्ज़ार क़ादिरि २-जव्वी دوست محمد کاظم العالی

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



मस्जिदें खुशबूदार रखिये



शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला (24 सफ़हात)

पूरा पढ़ कर अपनी आखिरत का भला कीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल

उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : जिस ने मुझ पर दिन भर में एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले ।

(अलत्रुग़ीब والترहیب ج २ ص ३२८ حديث २२)

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मस्जिद में बलग़म देख कर सरकार की ना गवारी

एक मर्तबा हुज़ुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

मुहूतशम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मस्जिदुन्न-बविथ्यिशशरीफ़ में क़िब्ला की तरफ़ बलग़म पड़ी देखी तो ना राज़गी का इज़हार फ़रमाया । येह देख कर एक अन्सारी सहाबिय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا उठीं और उसे खुरच कर साफ़कर केवहां खुशबू लगा दी । आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मसरत आमेज़ लहजे में इर्शाद फ़रमाया : **مَا أَحْسَنَ هَذَا** : कितना ही उम्दा काम किया है ।

(नसائی ص १२६ حديث ७२०)

फरमाने मुखफा **فَارُكَّهْ** : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُمَّ** (س) उस पर दस रहमतें भेजता है।

फ़ारूके आ 'जम और मस्जिद में खुशबू

सय्यिदुना फ़ारूके आ 'जम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** हर जुमुअतुल मुबारक को मस्जिदुन-बविथ्थिश्शरीफ **عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** में खुशबू की धूनी दिया करते थे। (مُسْنَدُ أَبِي يَعْقُبٍ ج ۱ ص ۱۰۳ حدیث ۱۸۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मस्जिदें खुशबूदार रखिये !

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** रिवायत फ़रमाती हैं : हुज़ुरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने महल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और यह कि वोह साफ़ और खुशबूदार रखी जाएं। (ابوداؤد ج ۱ ص ۱۹۷ حدیث ६००)

एयर फ़्रेशनर से केन्सर हो सकता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मस्जिदें ऊद, लूबान और अगरबत्ती वगैरा से खुशबूदार रखना कारे सवाब है। मगर मस्जिद में ऐसी दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) न जलाइये जिस से बारूद की बदबू निकलती है क्यूं कि मस्जिद को बदबू से बचाना वाजिब है। बारूद का बदबूदार धुवां अन्दर न आने पाए इतनी दूर बाहर से लूबान या अगरबत्ती वगैरा सुलगा कर मस्जिद में लाइये। अगरबत्तियों को किसी बड़े तश्त वगैरा में रखना ज़रूरी है ताकि इस की राख मस्जिद के फ़र्श

फरमानें मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (بخاری)

वगैरा पर न गिरे । अगरबत्ती के **पेकिट** पर अगर जानदार की तस्वीर बनी हुई हो तो उस को खुरच डालिये । मस्जिद (नीज़ घरों और कारों वगैरा) में “**एयर फ़्रेशनर**” (**AIR FRESHNER**) से खुशबू का छिड़काव मत कीजिये कि उस के कीमियावी मादे फ़ज़ा में फैल जाते और सांस के ज़रीए **फेफड़ों** में पहुंच कर नुक़सान पहुंचाते हैं । एक तिब्बी तहकीक के मुताबिक़ एयर फ़्रेशनर के इस्ति‘माल से जिल्द का सरतान या’नी (**SKIN CANCER**) हो सकता है । जहां उर्फ़ हो वहां मस्जिद के चन्दे से खुशबू सुलगाने की इजाज़त है और जहां उर्फ़ न हो वहां खुशबू की सराहत कर के अलग से चन्दा हासिल करें ।

मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना हराम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! भूक से कम खाने की आदत बनाइये या’नी अभी ख़्वाहिश बाकी हो कि हाथ रोक लीजिये । अगर ख़ूब डट कर खाते रहे और वक़्त बे वक़्त सीख़ कबाब, बर्गर, आलू छोले, पिज़्ज़े, आइस्क्रीम, ठन्डी बोतलें वगैरा पेट में पहुंचाते रहे, पेट ख़राब हो गया और खुदा ना ख़्वास्ता “गन्दा द-हनी” या’नी **मुंह से बदबू** आने की बीमारी लग गई तो सख़्त इम्तिहान हो जाएगा, क्यूं कि मुंह से **बदबू** आती हो तो मस्जिद का दाख़िला हराम है, यहां तक कि जिस वक़्त मुंह से **बदबू** आ रही हो उस वक़्त बा जमाअत नमाज़ पढ़ने के लिये भी मस्जिद में आना गुनाह है । चूंकि फ़िक़रे आख़िरत की कमी के बाइस लोगों की भारी अक्सरियत में खाने की हिर्स ज़ियादा और आज कल हर तरफ़ “**फूड कल्चर**” का दौर दौरा है, इस वजह से एक ता’दाद है जिन के मुंह

क़रमाबे मुस्त्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अब्दुल)

से बदबू आती है। मुझे बारहा का तजरिबा है कि जब कोई मुंह क़रीब कर के बात करता है तो उस के मुंह की बदबू के सबब सांस रोकना पड़ता है। बा'ज अवकात इमाम व मुअज़्ज़िन को भी गन्दा द-हनी का मरज हो जाता है, ऐसा हो तो इन्हें फ़ौरन छुट्टियां ले कर इलाज करना चाहिये क्यूं कि मुंह में बदबू होने की सूरत में मस्जिद के अन्दर दाखिल होना हराम है। अफ़सोस ! बदबूदार मुंह वाले कई अफ़राद **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ** मस्जिद के अन्दर मो'तकिफ़ भी हो जाते हैं। याद रखिये ! शर-ई हुक्म येह है कि अगर दौराने ए'तिकाफ़ भी मुंह में बदबू का मरज हो जाए तो ए'तिकाफ़ तोड़ कर मस्जिद से चला जाना होगा। बा'द में एक दिन के ए'तिकाफ़ की क़ज़ा कर ले। र-मज़ानुल मुबारक में कबाब समोसे और दीगर तली हुई चीज़ें और तरह तरह की मुरग़न ग़िज़ाएं ठूस ठांस कर खाने के सबब मुंह की बदबू वाले मरीजों में इज़ाफ़ा हो जाता है, इस का बेहतरीन इलाज येह है कि सादा ग़िज़ा और वोह भी भूक से कम खाए और हाज़िमा दुरुस्त रखे। नीज़ जब भी खा चुके ख़िलाल करने और ख़ूब अच्छी तरह कुल्लियां वगैरा कर के मुंह साफ़ रखने की आदत बनाए वरना ग़िज़ा के अज्ज़ा दांतों के ख़ला (GAPE) में रह जाते, सड़ते और बदबू लाते हैं। सिर्फ़ मुंह ही की बदबू नहीं हर तरह की बदबू से मस्जिद को बचाना वाजिब है।

मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है

फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 7 सफ़हा 384 पर है : मुंह में बदबू होने की हालत में (घर में पढ़ी जाने वाली) नमाज़ भी मक्रूह है और ऐसी

फरमाने मुखफा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मुत्तावा)

हालत में मस्जिद जाना हराम है जब तक मुंह साफ़ न कर ले। और दूसरे नमाज़ी को ईजा पहुंचनी हराम है और दूसरा नमाज़ी न भी हो तो भी बदबू से मलाएका को ईजा पहुंचती है। हदीस में है : जिस चीज़ से इन्सान तक्लीफ़ महसूस करते हैं फ़िरिश्ते भी उस से तक्लीफ़ महसूस करते हैं।

(मुस्लिम २८२ व ५६६ हदीथ)

बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमा-न-अत

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : “जिस के बदन में बदबू हो कि उस से नमाज़ियों को ईजा हो म-सलन **مَعَادَ اللّٰهِ** गन्दा दहन (या'नी जिस को मुंह से बदबू आने की बीमारी हो), गन्दा बग़ल (या'नी जिस के बग़ल से बदबू आने का मरज़ हो) या जिस ने ख़ारिश वग़ैरा के बाइस गन्धक मली (या कोई सा बदबूदार मरहम या लोशन लगाया) हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।”

(फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 8, स. 72)

कच्ची पियाज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है

कच्ची मूली, कच्ची पियाज़, कच्चा लहसन और हर वोह चीज़ कि जिस की बू ना पसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में बू बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को इस से तक्लीफ़ होती है। हदीस शरीफ़ में है, **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, फ़ातिहुल कुलूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने फ़रमाया : “जिस ने पियाज़, लहसन या गिंदना (लहसन से मिलती जुलती एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के

फ़रमाने मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफा की। (عمر/अल)

क़रीब हरगिज़ न आए।” (मुस्लिम स २८२, हदीथ ०६६)

“अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की बू दूर कर लो।”

(अबुदावूद ज ३ स ५०६, हदीथ २८२७)

मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लहसन और कच्ची पियाज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक कि बू बाक़ी हो और येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में बू हो जैसे गिंदना (येह लहसन से मिलती जुलती तरकारी है) मूली, कच्चा गोश्त और मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई जिस के रगड़ने में बू उड़ती हो, रियाह ख़ारिज करना वगैरा वगैरा। जिस को गन्दा द-हनी का आरिज़ा (या'नी मुंह से बदबू आने की बीमारी) या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवा लगाई हो तो जब तक बू मुन्क़तेअ (या'नी ख़त्म) न हो उस को मस्जिद में आने की मुमा-न-अत है। (बहारे शरीअत, जि. १, स. ६४८)

कच्चा गोश्त वगैरा पाक चीज़ की अगर इस तरह पेकिंग कर ली जाए कि मा'मूली सी भी बदबू न आए तो अब मस्जिद में ले जाने में हरज नहीं।

कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से मोहतात रहिये

कच्ची पियाज़ वाले चने, छोले, राइते और कचूमर नीज़ कच्चे लहसन वाले अचार चटनी वगैरा खाने से नमाज़ के अवकात में परहेज़ कीजिये। बा'ज़ अवकात कबाब समोसे वगैरा में भी कच्ची पियाज़ और कच्चे लहसन की बू महसूस होती है लिहाज़ा नमाज़ से पहले इन को भी न खाइये। ऐसी बू वाली चीज़ें मस्जिद में लाने की भी इजाज़त नहीं।

फरमावे मुखफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुझ पर रोज़ जुमूआं दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क्राइल)

मज्मअ में अगरबत्ती सुलगाना

मुसल्मानों के इज्तिमाअ में खुशबू पहुंचाने की निय्यत से अगरबत्ती वगैरा जलाना कारे सवाब है। अगर लूबान या अगरबत्ती के धूएं से किसी को तक्लीफ़ होती हो तो ऐसे मौकअ पर खुशबू न जलाई जाए इसी तरह मज्मअ पर ज़ियादा मिक्दार में “खुशबूदार पानी” छिड़कने से भी बचें कि आम तौर पर इस से लोगों को कोफ़्त और परेशानी होती है।

बदबूदार मुंह ले कर मुसल्मानों के मज्मअ में जाने की मुमा-न-अत

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رَحْمَةُ الْخَنَانِ फ़रमाते हैं : मुसल्मानों के मज्मअओं, दर्से कुरआन की मजलिसों, उ-लमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बदबूदार मुंह ले कर न जाओ। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक मुंह में बदबू रहे घर में ही रहो, मुसल्मानों के जल्सों, मज्मअओं में न जाओ। हुक्का पीने वाले, तम्बाकू वाले, पान खा कर कुल्ली न करने वालों को इस से इब्रत पकड़नी चाहिये। फु-क़हाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिसे गन्दा द-हनी की बीमारी हो उसे मस्जिदों की हाज़िरी मुआफ़ है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 25, 26)

नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ?

सुवाल : “गन्दा दहन” को मस्जिद की हाज़िरी मुआफ़ है, तो क्या कच्ची पियाज़ वाला राइता या कचूमर या ऐसे कबाब समोसे जिन में लहसन पियाज़ बराबर पके हुए न हों और उन की बू आती हो या मसली हुई बाजरे की रोटी जिस में कच्चा लहसन शामिल होता है ऐसी ग़िज़ा वगैरा जमाअत से कुछ देर पहले इस निय्यत

फरमाने मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (अबुल)

से खा सकते हैं कि मुंह में बदबू हो जाए और जमाअत वाजिब न रहे !

जवाब : ऐसा करना जाइज नहीं। म-सलन जहां इशा की जमाअत अव्वल वक्त में होती है वहां नमाजे मगरिब के बा'द ऐसा कचूमर या सलाद वगैरा न खाए जिस में कच्ची मूली या कच्ची पियाज या कच्चा लहसन हो क्यूं कि इतनी जल्दी मुंह साफ़ कर के मस्जिद में पहुंचना दुश्वार होता है। हां अगर जल्द मुंह साफ़ करना मुम्किन है या किसी और वजह से मस्जिद की हाजिरी से मा'जूर है म-सलन औरत। या नमाज पढ़ने में अभी काफी देर है उस वक्त तक **बू खत्म** हो जाएगी तो खाने में मुजा-यका नहीं। **मेरे आका** आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़रमाते हैं : कच्चा लहसन पियाज खाना कि बिला शुबा हलाल है और उसे खा कर जब तक बू ज़ाइल न हो मस्जिद में जाना मम्नूअ मगर जो हुक्का ऐसा कसीफ़ (गाढ़ा) व बे एहतिमाम हो कि **مَعَاذَ اللَّهِ** तग़य्युरे बाक़ी (या'नी देर पा बदबू) पैदा करे कि वक्ते जमाअत तक कुल्ली से भी **बकुल्ली** (या'नी मुकम्मल तौर पर) ज़ाइल न हो तो कुर्बे जमाअत में इस का पीना शरअन **ना जाइज** कि अब वोह तर्के जमाअत व तर्के सज्दा या बदबू के साथ दुखूले मस्जिद का मूजिब (सबब) होगा और येह दोनों मम्नूअ व ना जाइज हैं और (येह शर-ई उसूल है कि) हर मुबाह फ़ी नफ़्सिही (या'नी हर वोह काम जो हकीकत में जाइज हो मगर) अग्रे मम्नूअ की तरफ़ **मुअद्दी** (या'नी मम्नूअ काम की तरफ़ ले जाने वाला) हो मम्नूअ व ना रवा है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 25, स. 94)

कच्ची पियाज खाते वक्त बिस्मिल्लाह मत पढ़िये

फ़तावा फ़ैजुर्रसूल जिल्द 2 सफ़हा 506 पर है : हुक्का, बीड़ी, सिगरेट पीने और (कच्चे) लहसन, पियाज जैसी चीज़ खाने

फरमावे मुखफा **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

के वक्त और नजासत की जगहों में बिस्मिल्लाह पढ़ना मक्रूह है।

मुंह की बदबू मा 'लूम करने का तरीका

अगर मुंह में कोई तगय्युरे राइहा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से इस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वगैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई हद मुक़रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ (गाढ़ा) बे एहतियाती का हुक्का पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा सिगारेट वाले को कि इस की बदबू मुक्कब तम्बाकू से (भी) सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ाइद अशद ज़रूरत तम्बाकू खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का ज़िर्म (या'नी धूएं के बजाए खुद तम्बाकू ही) दबा रहता और मुंह अपनी बदबू से बसा देता है। येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और बू का अस्लन निशान न रहे और इस का इम्तिहान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर जोर से तीन³ बार हल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअन (या'नी फ़ौरन) सूंधें। बिगैर इस के अन्दर की बदबू खुद कम महसूस होती है और जब मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम, नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ **وَاللّٰهُ الْهَادِي**

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 623)

मुंह की बदबू का इलाज

अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में बदबू आती हो तो “हरा धनिया” चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा। हां अगर पेट की ख़राबी की

फरमाने मुखफर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूद पाक पढ़ा **अल्लाह** (طبرانی) उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

वजह से **बदबू** आती हो तो “कमखोरी” (या’नी खाने में कमी करने) की सआदत हासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** टांगों और बदन के मुख़लिफ़ हिस्सों के दर्द, कब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले (या’नी दाइमी) नज़्ले खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में खून आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक बाक़ी रहे इस तरह से कम खाने में **80 फ़ीसद अमराज़** से बचत हो सकती है। (तफ़सीली मा’लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब “पेट का कुफ़्ले मदीना” का मुता-लआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिर्स का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूहानी अमराज़ खुद ही दम तोड़ जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

मुंह की बदबू का म-दनी इलाज

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ -

मुन्द-र-जए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ ब मौक़अ एक ही सांस में **11** मरतबा पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुंह की **बदबू** जाइल (या’नी दूर) हो जाएगी। एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर तरीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरू कीजिये और मुम्किना हृद तक हवा **फेफ़ड़ों** में भर लीजिये। अब **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरू कीजिये। चन्द बार इस तरह मश्क़ करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल

फरमावे मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (अल्मज़ीब)

إِنْ شَاءَ اللهُ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़क़ूरा तरीके पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन हृद तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिद्दह्त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब जब मौक़अ मिले बिल खुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये। मुझे (या'नी सगे मदीना **عَفَى عَنْهُ** को) एक सिन रसीदा (या'नी बूढ़े) हकीम साहिब ने बताया था कि मैं सांस लेने के बा'द आधे घन्टे तक (या कहा) दो 2 घन्टे तक हवा को अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने विर्दों वज़ाइफ़ भी पढ़ सकता हूं। बक़ौल उन हकीम साहिब के सांस रोकने के ऐसे ऐसे मशशाक़ (या'नी मशक़ कर के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में होते हैं कि सुब्ह सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं !

इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिए ?

बारगाहे र-ज़विय्यत में सुवाल हुवा कि नमाज़ियों के लिये इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर बनाने चाहिए ? इस पर मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद को बू से बचाना वाजिब है व लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना **हराम**, मस्जिद में दिया सलाई (या'नी बदबूदार बारूद वाली माचिस की तीली) सुलगाना **हराम**, हत्ता कि हदीस में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना **जाइज़** नहीं। (ابن ماجه ج ١ ص ٤١٣ حديث ٧٤٨)

ह़ालां कि कच्चे गोश्त की बू बहुत ख़फ़ीफ़ (या'नी हलकी) है। तो जहां

फरमाने मुखफा **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْأَسْلَم :** उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद पाक न पड़े । (एम)

से मस्जिद में बू पहुंचे वहां तक (इस्तिन्जा खाने बनाने की) मुमा-न-अत की जाएगी । (फ़तावा र-जविय्या, जि. 16, स. 232) कच्चे गोशत की बदबू हलकी होती है जब येह भी मस्जिद में ले जाना जाइज़ नहीं तो कच्ची मछली ले जाना ब-द-र-जए औला ना जाइज़ होगा क्यूं कि इस की बू गोशत से ज़ियादा तेज़ होती है बल्कि बा'ज़ अवकात पकाने वालों की बे एहतियाती के सबब इस का सालन खाने से हाथ और मुंह में ना गवार बू हो जाती है । ऐसी सूरत में बू दूर किये बिगैर मस्जिद में न जाए । इस्तिन्जा खानों की जब सफ़ाई की जाती है उस वक़्त बदबू काफ़ी फैलती है लिहाज़ा (इस्तिन्जा खाने और मस्जिद के दरमियान) इतना फ़ासिला रखना ज़रूरी है कि सफ़ाई के मौक़अ पर भी बदबू मस्जिद में दाख़िल न हो सके । इस्तिन्जा खाने इहातए मस्जिद में खुलते हों तो ज़रूरतन दीवार पाट कर बाहर की जानिब दरवाज़े निकाल कर भी बदबू से मस्जिद को बचाया जा सकता है ।

अपने लिबास वगैरा पर गौर करने की आदत बनाइये

मस्जिद में बदबू ले जाना हराम है । नीज़ हर तरह के बदबू वाले शख्स का दाख़िल होना भी हराम है । मस्जिद में किसी तिन्के से ख़िलाल भी न करें कि जो पाबन्दी से हर खाने के बा'द इस के आदी नहीं होते ख़िलाल करने से उन के दांतों से बदबू निकलती है । मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में भी इतनी दूर दांतों का ख़िलाल करे कि बदबू अस्ले मस्जिद में दाख़िल न हो । बदबूदार ज़ख़्म वाला या वोह मरीज़ जिस ने पेशाब या पाख़ाने की थेली (Urine bag 🌀 Stool bag) लगाई हुई है वोह मस्जिद में दाख़िल न हों । इसी तरह लेबोरेटरी टेस्ट करवाने के लिये ली हुई ख़ून

फरमाने मुखफा **عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूद पाक पढ़ा। उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (त्रैमाल)

या पेशाब की शीशी, ज़बीहा के ब वक्ते ज़ब्द निकले हुए खून से आलूद कपड़े वगैरा किसी चीज़ में छुपा कर भी मस्जिद के अन्दर नहीं ले जा सकते चुनान्चे फु-क़हाए किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** फ़रमाते हैं : मस्जिद में नजासत ले कर जाना अगर्चे उस से मस्जिद आलूदा न हो या जिस के बदन पर नजासत लगी हो उस को मस्जिद में जाना मन्अ है। (رَدُّ الْمُحْتَار ج २ ص १०१) मस्जिद में किसी बरतन के अन्दर पेशाब करना या फ़स्द का खून लेना (म-सलन टेस्ट के लिये सिरिन्ज के ज़रीए खून निकालना) भी जाइज़ नहीं। (ذُرْمُخْتَار ج २ ص १०१) पाक बदबू छुपी हुई हो जैसा कि अक्सर लोगों के बदन में पसीने की बदबू होती है मगर लिबास के नीचे छुपी हुई होती है और महसूस नहीं होती तो इस सूरत में मस्जिद के अन्दर जाने में कोई हरज नहीं। इसी तरह अगर रुमाल में पसीने वगैरा की बदबू है जैसा कि गरमी में मुंह का पसीना पोंछने से अक्सर हो जाती है तो ऐसा रुमाल मस्जिद के अन्दर न निकाले, जेब ही में रहने दे, अगर इमामा या टोपी उतारने से पसीने या मैल कुचैल वगैरा की बदबू आती है तो मस्जिद में न उतारे। चुनान्चे इस की मिसाल देते हुए **मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْخَنَان** फ़रमाते हैं : “हां अगर किसी सूरत से मिट्टी के तेल की बदबू उड़ा दी जाए या इस तरह लेम्प वगैरा में बन्द किया जाए कि उस की बदबू ज़ाहिर न हो तो (मस्जिद में) जाइज़ है।” (फ़तावा नईमिया, स. 49) हर मुसल्मान को अपने मुंह, बदन, रुमाल, लिबास और जूती चप्पल वगैरा पर गौर करते रहना चाहिये कि इस में कहीं से बदबू तो नहीं आ रही और ऐसा मैला कुचैला लिबास पहन कर भी मस्जिद में न आए जिस से लोगों को धिन आए। अफ़सोस ! दुन्यवी अफ़्सरों वगैरा के पास तो उम्दा लिबास पहन कर जाएं

फरमाने मुखफ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ पढ़ो **اَعْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (ابن عمر)

और अपने प्यारे प्यारे परवर दगार **عَزَّ وَجَلَّ** के दरबार में हाज़िरी के वक़्त या'नी नमाज़ में नफ़ासत (सफ़ाई और पाकीज़गी वगैरा) का कोई एहतिमाम न करें। मस्जिद में आते वक़्त इन्सान कम अज़ कम वोह लिबास तो पहने जो दा'वतों में पहन कर जाता है। मगर इस बात का ख़याल रखिये कि लिबास शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ हो।

मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमा-न-अत

सरकारे मदीना, सुलताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने बा क़रीना है : मस्जिदों को बच्चों और पागलों और ख़रीद व फ़रोख़्त और झगड़े और आवाज़ बुलन्द करने और हुदूद काइम करने और तलवार खींचने से बचाओ। (ابن ماجه ج ۱ ص ۴۱۵ حديث ۷۵۰)

ऐसा बच्चा जिस से नजासत (या'नी पेशाब वगैरा कर देने) का ख़तरा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना हराम है अगर नजासत का ख़तरा न हो तो मक्रूह। जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना बे अ-दबी है। (رَدُّ الْمُحْتَار ج ۲ ص ۵۱۸) **बच्चे या पागल** (या बेहोश या जिस पर ज़िन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये चाहे “पम्पर” लगा हो तब भी मस्जिद में ले जाने की शरीअत में इजाज़त नहीं। अगर आप ऐसों को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं तो बराए करम ! फ़ौरन तौबा कर के आयन्दा न लाने का अहद कीजिये। हां फ़िनाए मस्जिद म-सलन इमाम साहिब के हुजरे में ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से ले कर न गुज़रना पड़े।

फरमाने मुखफा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : मुझ पर कसرت से दुरूद पाक पढ़ा बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (मानम)

गोश्त, मछली बेचने वाले

गोश्त या मछली बेचने वाले के लिबास में सख्त बदबू होती है लिहाज़ा इन को चाहिये कि फ़ारिग़ हो कर अच्छी तरह नहाएं, साफ़ लिबास ज़ैबे तन फ़रमाएं, खुशबू लगाएं और फिर मस्जिद में आएँ। नहाना और खुशबू लगाना शर्त नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अर्ज किया है, कोई भी ऐसी तरकीब करें कि बदबू मुकम्मल तौर पर जाइल (या'नी दूर) हो जाए।

सोने से मुंह में बदबू हो जाती है

सोते में पेट की गन्दी हवाएं ऊपर की तरफ़ उठती हैं, लिहाज़ा बेदार होने पर मुंह में अक्सर बदबू होती है। इस ज़िम्न में फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़्हा 375 ता 376 से “सुवाल जवाब” मुला-हज़ा हों।

सुवाल : सोने से उठ कर आ-यतुल कुर्सी पढ़ना कैसा है ? बा'ज उस्ताद हुक्का पीते हैं और शागिर्द को (कुरआने करीम) पढ़ाते जाते हैं।

जवाब : सोने से उठ कर हाथ धो कर कुल्ली कर ले इस के बा'द आ-यतुल कुर्सी पढ़े, अगर मुंह में हुक्के वगैरा की बदबू हो या कोई खाने पीने की चीज़ हो तो बिगैर कुल्ली किये तिलावत न करे।

जो उस्ताद ऐसा करते हैं बुरा करते हैं। **وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم** (फ़तावा

र-ज़विय्या, जि. 23, स. 375, 376) हमारे मुअत्तर मुअत्तर आका

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मस्ऊद हर वक़्त महक्ता रहता था,

मिज़ाजे मुबारक में निहायत नफ़ासत थी, मिस्वाक सोते वक़्त सिरहाने रहती, उठते तो सब से पहले मिस्वाक करते। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** सोने में

सिरहाने मिस्वाक रखना और उठ कर मिस्वाक करना सुन्नत हुवा।

फरमावे मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ पढ़ता है **अब्बाह** (مبارك) उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है ।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब नींद से बेदार होते तो मिस्वाक करते थे । (अबुदावूद ज १ व ५६ हदीथ ०७)

बा'जु गिज़ाओं की वजह से पसीने में बदबू

बा'जु गिज़ाएं ऐसी होती हैं जिन के खाने से बदबूदार पसीना आता है ऐसे अफ़राद गिज़ाएं तब्दील फ़रमाएं ।

मुंह की सफ़ाई का तरीका

जो मिस्वाक और खाने के बा'द खिलाल नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह बदबूदार होते हैं । सिर्फ़ रस्मी तौर पर मिस्वाक और खिलाल का तिन्का दांतों से मस (TOUCH) कर देना काफी नहीं होता । मसूढ़े ज़ख्मी न हों इस एहतियात के साथ मुम्किना सूरत में गिज़ा का एक एक ज़रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान गिज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद (या'नी बदबू) का बाइस बनते रहेंगे । दांतों की सफ़ाई का एक तरीका येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वगैरा पीने के बा'द और इस के इलावा भी जब जब मौक़ा मिले म-सलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और **जुम्बिशें** देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस तरह मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा । सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला क़ाबिले बरदाश्त गर्म पानी हो तो येह **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बेहतरीन “माउथ वॉश” साबित होगा ।

फ़रमाने मुख़फ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

दाढ़ी को बदबू से बचाइये

दाढ़ी में अक्सर गिज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, सोने में बा'ज अवक़ात मुंह की बदबूदार राल भी दाख़िल हो जाती है और इस तरह बदबू आती है लिहाज़ा वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से दाढ़ी धो लेना मुनासिब है। इसी तरह सर के बाल भी वक़्तन फ़ वक़्तन धोते रहिये।

फ़रमाने मुख़फ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : “जिस के बाल हों उन का इक़ाम करे।” (ابوداؤد ج ४ ص १०३ حديث ६१६३) या'नी इन्हें धोए, तेल लगाए और कंधी करे। (أَشْعَةُ اللَّمَعَات ج ३ ص १११)

खुशबूदार तेल बनाने का आसान तरीक़ा

सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज अवक़ात बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह उम्दा खुशबूदार तेल डाले खुशबूदार तेल बनाने का एक आसान तरीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के चन्द क़तरे डाल कर हल कर लीजिये। खुशबूदार तेल तय्यार है। (खुशबूदार तेल बनाने के मख़्सूस ऐसेसेन्स भी खुशबूयात की दुकानों से हासिल किये जा सकते हैं) सर के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से धोते रहिये।

हो सके तो रोज़ नहाइये

जिस से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी हद तक बदन की बाहरी बदबू ज़ाइल होगी और येह सिद्दह्त के लिये भी मुफ़ीद है। (मगर

फरमावे मुखफा ﷺ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** (स्) उस पर दस रहमतें भेजता है।

मो'तकिफ़ीन मस्जिद के गुस्ल खानों में बिला सख़्त ज़रूरत के न नहाएं कि नमाज़ियों के लिये वुजू के पानी की तंगी हो सकती है और मोटर भी बार बार चलने की वजह से ख़राब हो सकती है नीज़ तब नहाएं जब गुस्ल खाने फ़िनाए मस्जिद में हों अगर ख़ारिजे मस्जिद में हों तो गुस्ले जुमुआ की भी इजाज़त नहीं सिर्फ़ फ़र्ज़ गुस्ल की इजाज़त है)

इमामा वगैरा को बदबू से बचाने का तरीक़ा

बा'ज इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ का इमामा शरीफ़ बांधने का ज़ब्बा तो रखते हैं मगर सफ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं बसा अवकात ला शुक्ऱी में मस्जिद के अन्दर “बदबू” फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं। लिहाज़ा **म-दनी इल्तिजा** है कि इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर इस्ति'माल करने वाले इस्लामी भाई मौसिम के ए'तिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने की तरकीब बनाते रहें, वरना मैल कुचैल, पसीना और तेल वगैरा के सबब इन चीज़ों में **बदबू** हो जाती है, अगर्चे खुद को महसूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन आती है, खुद को इस लिये पता नहीं चलता कि जिस के पास ज़ियादा देर तक कोई मख़सूस खुशबू या **बदबू** हो इस से उस की नाक अट जाती है।

इमामा कैसा होना चाहिये

सख़्त टोपी पर बंधे बंधाए इमामे का इस्ति'माल भी इस के अन्दर **बदबू** पैदा कर सकता है। अगर हो सके तो बारीक मलमल के हलके फुलके कपड़े का इमामा शरीफ़ इस्ति'माल कीजिये और इस के लिये कपड़े की ऐसी टोपी पहनिये जो सर से चिपड़ी हुई हो कि ऐसी

फरमावे मुखफा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : जो शख्स मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (ग़रान)

टोपी पहनना भी सुन्नत है। बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर रख लेने और उतार कर रख देने के बजाए बांधते वक़्त एक एक पेच कर के बांधिये और इसी तरह खोलने की तरकीब कीजिये। और बार बार हवा लगाने की वजह से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बदबू भी दूर होगी। इमामा व सरबन्द शरीफ़, चादर और लिबास वगैरा को उतार कर धूप में डालने से भी पसीने वगैरा की बदबू दूर हो सकती है। नीज़ इन पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उम्दा इत्र लगाते रहना भी बदबू को दूर कर सकता है। जिम्नन इत्र लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ भी मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये :

खुशबू लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** : “मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।” (1) **السُّنَنُ الْكُبْرَى ج ٦ ص ١٨٥** (1) सुन्नते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** है इस लिये खुशबू लगाऊंगा (2) लगाने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** (3) खुशबू आने पर लगाते हुए दुरुद शरीफ़ और (4) लगाने के बाद अदाए शुक्रे नेमत की निय्यत से **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ** कहूंगा (5) मलाएका और (6) मुसल्मानों को फ़रहत (खुशी) पहुंचाऊंगा (7) अक्ल बढ़ेगी तो अहक़ामे शर-ई याद करने और सुन्नतें सीखने पर कुव्वत हासिल करूंगा (इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي** फ़रमाते हैं : उम्दा खुशबू लगाने से अक्ल बढ़ती है। (1) **احياء العلوم ج ١ ص ٢٤٤**) (8) लिबास वगैरा से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत के गुनाहों से बचाऊंगा (क्यूं कि किसी मुसल्मान का लिबास वगैरा बदबूदार हो तो बिला इजाज़ते शर-ई उस के पीछे से म-सलन इस तरह कहना कि “उस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी”

फरमानें मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अन०)

गीबत है) (9) मौक़अ की मुना-सबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं म-सलन (10) नमाज़ के लिये जीनत हासिल करूंगा (11) मस्जिद (12) नमाज़े तहज्जुद (13) जुमुआ (14) पीर शरीफ़ (15) र-मज़ानुल मुबारक (16) ईदुल फ़ित्र (17) ईदुल अज़्हा (18) शबे मीलाद (19) ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (20) जुलूसे मीलाद (21) शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (22) शबे बराअत (23) ग्यारहवीं शरीफ़ (24) यौमे रज़ा (25) दर्से कुरआन व (26) हदीस (27) तिलावत (28) अवरदो वज़ाइफ़ (29) दुरूद शरीफ़ (30) दीनी किताब का मुता-लआ (31) तदरीसे इल्मे दीन (32) ता'लीमे इल्मे दीन (33) फ़तवा नवीसी (34) दीनी कुतुब की तस्नीफ़ व तालीफ़ (35) सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (36) इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त (37) कुरआन ख़्वानी (38) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत (39) अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत (40) सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त (41) अलिम (42) मां (43) बाप (44) मोमिने सालेह (45) पीर साहिब (46) मूए मुबारक की ज़ियारत और (47) मज़ार शरीफ़ की हाज़िरी के मवाक़ेअ पर भी ता'जीम की निय्यत से खुशबू लगाई जा सकती है । जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा सवाब मिलेगा । जब कि निय्यत का मौक़अ भी हो और वोह निय्यत शरअन दुरुस्त भी हो । ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़ कम दो² तीन³ निय्यतें कर ही लेनी चाहिएं ।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज तक हम से जितनी बार भी मस्जिद में बदबू ले जाने का गुनाह हुवा हो उस से तौबा करते हैं और

फरमावे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा **अल्लाह** (स्) उस पर दस रहमतें भेजता है।

येह अज़म करते हैं कि आयन्दा कभी भी मस्जिद में किसी तरह की बदबू नहीं ले जाएंगे। **या रब्बे मुस्तफ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मसाजिद को खुशबूदार रखने की सआदत दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर तरह की ज़ाहिरी बातिनी बदबूओं से पाक हो कर मस्जिद में हाज़िरी की सआदत अता फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे खुशबूदार सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके हमें गुनाहों की बदबूओं से नजात दे और खुशबूओं से महक्ती हुई जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुअत्तर मुअत्तर हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस नसीब फ़रमा।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

वल्लाह जो मल जाए मेरे गुल का पसीना

मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

(हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अपने दांत गौर से आईने में देख लीजिये

खैर ख़्वाही के जज़्बे के तहत सवाब कमाने की हिर्स में अर्ज है

कि अगर आप के दांत मैले कुचैले या पीले हैं तो खुश दिली के साथ **सगे**

मदीना مَدِيْنَةُ نَبِيِّكَ ﷺ की तरफ़ से चन्द म-दनी फूल क़बूल फ़रमा लीजिये,

بَارِكْ وَسَلِّمْ **إِنْ شَاءَ اللهُ** बहुत फ़ाएदा होगा।

❁ मैले कुचैले दांत दूसरों के लिये कराहत और घिन का बाइस होते हैं

❁ मुलाक़ाती वगैरा पर मैले दांत वाले की शख़्सियत का असर अच्छा

नहीं पड़ता ❁ ब कसरत पान गुटके वगैरा खाने वाले गोया पैसे दे कर

अपने दांतों का हुस्न तबाह करते, मुंह का छाला और केन्सर ख़रीदते हैं

फरमावे मुखफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जो शख्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (ग्रान)

❁ मिस्वाक सुन्नत के मुताबिक अच्छी तरह रगड़ रगड़ कर कीजिये ❁ खाने के बा'द दांतों में ख़िलाल करने का मा'मूल बना लीजिये ❁ जब भी कुछ खाएं या चाय वगैरा पियें, कुल्ली भर कर चन्द मिनट तक मुंह में पानी हिलाते रहें इस तरह मुंह का अन्दरूनी हिस्सा और दांत किसी हद तक धुल जाएंगे ❁ सोते वक्त हल्क़ और दांत अच्छी तरह साफ़ होने चाहिए, वरना गले में तकलीफ़ और दांतों पर मैल की तह मज़बूती से जमेगी, बन्द मुंह के अन्दर गिज़ाई अज्ज़ा सड़ने से मुंह में बदबू होगी और जरासीम पेट में जाने से तरह तरह की बीमारियां जनम ले सकती हैं ❁ सोने में पेट की गन्दी हवाएं ऊपर को उठती हैं लिहाज़ा मुंह बदबूदार हो जाता है, उठ कर फौरन हाथ धो कर मिस्वाक कर के कुल्लियां कर लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुंह की बदबू जाती रहेगी ।

बेहतरीन मन्जन

मुनासिब मिक्दार में खाने का सोडा और उतना ही नमक मिला कर बोतल में डाल लीजिये, बेहतरीन मन्जन तय्यार है । अगर मुवाफ़िक़ हो तो रोज़ाना इस से दांत मांझिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हाथों हाथ दांतों का मैल उतरता देखेंगे । बिलफ़र्ज मसूढ़े या मुंह में किसी जगह जलन वगैरा महसूस फ़रमाएं तो मिक्दार कम कर के देख लीजिये, अब भी तकलीफ़ हो तो सफ़ाई की कोई और तदबीर कीजिये, दांत बहर हाल साफ़ होने चाहिए ।

म-दनी फूल : हर तरह की सफ़ाई सुन्नत और मतलूबे शरीअत है ।

फरमाने मुस्तफा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अ. १)

**बदबू न दहन में हो, दांतों की सफ़ाई हो
महकाई दुरूदों की मुंह में तेरे भाई हो
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

नोट : येह रिसाला पहली बार 12 शा'बानुल मुअज्ज़म 1427 सि.हि. (ब मुताबिक 6-09-2006) को तरतीब पाया और कई बार शाएअ किया गया फिर 5 रबीउल ग़ौस 1433 सि.हि. (ब मुताबिक 28-2-2012) में इस पर नज़रे सानी की ।

बैठ रिसाला पढ़कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूस मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ्लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब नियते सवाब तोहफे में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ्लेट पहुंचा कर नेकी को दा'वत की धूम मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

त़लिबे ग़मे मदीना व
बकीअ व मग़िफ़त व
बे हिसाब ज़नतुल
फ़िरदौस में आक
का पड़ेस



5 रबीउल ग़ौस 1433 सि.हि.
28-2-2012

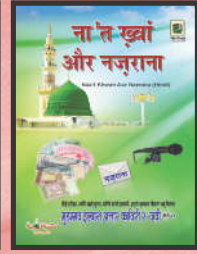
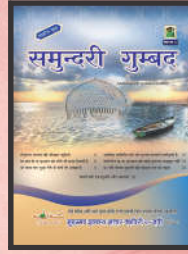
माخذ ومراجع

مطبوعه	كتاب	مطبوعه	كتاب
فیضان القرآن، پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مرآة المناجیح	دار ابن حزم بیروت	صحیح مسلم
دار المعرفۃ بیروت	در مختار	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دار المعرفۃ بیروت	رد المحتار	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سنن نسائی
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار المعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
شیر برادر مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ فیض الرسول	دار الکتب العلمیۃ بیروت	مسند ابی یعلیٰ
کتب اسلامیہ سحرات	فتاویٰ نعیمیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت	معجم کبیر
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترہیب
☆☆☆	☆☆☆	کوئٹہ	اشعۃ المذہبات

फरमावे मुखफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (मुत्तावा)

फेहरिस

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ की फज़ीलत	1	इस्तिन्ज़ा खाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिए ?	11
मस्जिद में बल्ग़म देख कर सरकार की ना गवारी	1	अपने लिबास वगैरा पर गौर करने की आदत बनाइये	12
फ़ारूके आ'ज़म और मस्जिद में खुशबू	2	मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमा-न-अत	14
मस्जिदें खुशबूदार रखिये !	2	गोश्त, मछली बेचने वाले	15
एयर फ़्रेशनर से केन्सर हो सकता है	2	सोने से मुंह में बदबू हो जाती है	15
मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है	3	बा'ज ग़िज़ाओं की वजह से पसीने में बदबू	16
मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है	4	मुंह की सफ़ाई का तरीका	16
बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमा-न-अत	5	दाढ़ी को बदबू से बचाइये	17
कच्ची पियाज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है	5	खुशबूदार तेल बनाने का आसान तरीका	17
मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं	6	हो सके तो रोज़ नहाइये	17
कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से मोहताज़ रहिये	6	इमामा वगैरा को बदबू से बचाने का तरीका	18
मज्मअ में अगरबत्ती सुलगाना	7	इमामा कैसा होना चाहिये	18
बदबूदार मुंह ले कर मुसलमानों के मज्मअ में जाने की मुमा-न-अत	7	खुशबू लगाने की नियतें और मवाकेअ	19
नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ?	7	अपने दांत गौर से आईने में देख लीजिये	21
कच्ची पियाज़ खाते वक़्त बिस्मिल्लाह मत पढ़िये	8	बेहतरीन मन्ज़न	22
मुंह की बदबू मा'लूम करने का तरीका	9	माख़जो मराजेअ	23
मुंह की बदबू का इलाज़	9	फ़ेहरिस	24
मुंह की बदबू का म-दनी इलाज़	10	☆☆☆☆☆☆	



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

تब्लीगी کुरآنو سوننت کی آلالمगीر گئر سییاسی तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्के मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इत्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़्त करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

माक-त-बातुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 9326310099

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दौरेन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

माक-त-बातुल मदीना®

दा'वते इस्लामी



फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net